शैलीवैज्ञानिक अध्ययन प्रणाली

—डॉ. मीनाक्षी व्यास
असेसियेट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग,
मुक्त शिक्षा कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय

शैलीवैज्ञानिक अध्ययन प्रणाली साहित्य की आलोचना को वैज्ञानिक रूप प्रदान करने वाली प्रणाली है। शैली विज्ञान के अनुसार— शैली के अंतर्गत—चयन, विचलन अप्रस्तुत जैसी अभिव्यक्ति की विशिष्टता होती है। शैली विज्ञान कृति में इन शैलीगत वैशिष्ट्यों का भाषा वैज्ञानिक धरातल पर अध्ययन करता है। शैली को 'सहेतुक पद्धति' भी कहा गया है। यह शैली अथवा सहेतुक पद्धति किसी विषय को कृति के रूप में रूपांतरित करती है और अपनी स्थिति के द्वारा उस कथ्य तक पहुँचा देती है जो शैली के भीतर रूपायित होता है। कृति के कथ्य तथा अभिव्यक्ति दोनों से संबद्ध होने के कारण शैलीवैज्ञानिक अध्ययन अर्थ के नये स्तर स्पष्ट करता है। इस प्रकार शैलीविज्ञान अनुप्रयुक्त विज्ञान तथा साहित्य समीक्षा की प्रणाली के रूप में जाना जाता है।

'अगर कलात्मक संवेग वह प्रवृत्ति है जो काव्यकृति की संरचना

अथवा विनियोजन का हेतु है, तब यह कहा जा सकता है कि वृत्ति का भाषिक रूपांतर 'सहेतुक भाषा पद्धति' अथवा शैली है।' ('संरचनात्मक शैली विज्ञान'– डॉ. श्रीवास्तव) शैलीविज्ञान, शैली का विज्ञान है, जिसमें शैली का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन किया जाता है। यह 'शैली' अंग्रेजी के 'स्टाइल' का अनुवाद है।

इसको भाषा–शैली भी कहते हैं। भाषा–शैली भावानुरूप होती है। भावनाये अपने को प्रस्तुत करने के लिए शैली की विशेषताओं–चयन, विचलन, वक्रोक्ति को अपनाती है।

शैली के अंतर्गत–प्रतीक, बिम्ब, लय, नादात्मकता अभिव्यक्ति की पद्धतियों का भी समावेश होता है। कृति के संदर्भ में इसका मूल्यांकन होता है। कृति में शैली का वो रूप ग्राह्य होता है जिससे कथ्य की नई परतें स्पष्ट हों।

'शैली' – न तो पुरातन पद्धति का परिचायक है, न काव्य–शास्त्र की किसी रूढ़ि का द्योतक है, न यह 'पद–रचना' तक है और न यह किसी कथ्यपरक अर्थ के लिए प्रयुक्त होता है, अपितु यह अभिव्यक्ति की विविध पद्धतियों को प्रयुक्त करता है, यह लेखन प्रविधि के सभी

तत्त्वों को अपने अन्तर्गत समाहित किये हुए है और यह कृति के अतिरिक्त कृतिकार के व्यक्तित्व, विचार तथा व्यक्तिपरक विशेषताओं का भी द्योतक है। उदाहरण के लिए– सर्वेश्वर की कविता को निजी शैलीगत विशेषताओं के कारण अलगाया तथा पहचाना जा सकता है। उसमें चयन, विचलन, अप्रस्तुतों तथा व्यंग्यपरक प्रतीकों को विशिष्ट लेखीय उपादानों के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

काव्य–शास्त्र में शैली के विभिन्न उपादानों– अलंकार, वक्रोक्ति, का विवेचन वर्गीकरण तो मिलता है, परन्तु शैली की स्वतन्त्र रूप में कोई व्याख्या नहीं की गयी है। शैली के बारे में पाश्चात्य विद्वानों ने अधिक लिखा है और शैली की विविध रूप में व्याख्यायें व परिभाषायें, स्पष्ट की हैं। पाश्चात्य विद्वानों में से प्लेटो का कथन है कि 'जब विचार को रूप दिया जाता है, तभी शैली का प्रकटन होता है।' डॉ. जानसन का विचार है कि 'प्रत्येक लेखक एक विशिष्ट शैली को अपनाता है।'

शैली–बोली और कथ्य दोनों में ही विद्यमान रहती है। शरन का कथन है कि– 'किसी भी कलात्मक अभिव्यक्ति में व्यक्तित्व की

विद्यमानता को शैली कह सकते हैं।' इनके अतिरिक्त भी विद्वानों का मत है कि 'शैली–अभिव्यक्ति के उस वैशिष्ट्य को कहते हैं, जो विचारों को उचित ढंग से प्रेषित करता है।' इस प्रकार पाश्चात्य विद्वानों ने शैली की विविध प्रकार से व्याख्या करते हुए उसे लेखक के भावों व विचारों का सम्प्रेषण करने वाली एक ऐसी पद्धति कहा है, जो लेखक के विचारों में तथा अभिव्यंजना में होती है और भाषा के माध्यम से व्यक्त होती है। उसमें सदैव कवि के व्यक्तिगत वैशिष्ट्य रहते हैं।

शैली अभिव्यक्ति का वैयक्तिक प्रकार है। शैली अभिव्यक्ति के सामान्य प्रकारों को भी कहते हैं। शैली वर्णन की विशिष्टता तथा अभिव्यक्ति के उस ढंग को कहते हैं जिसे लेखक अपने विचारों को संप्रेषित करने के लिए अपनाता है। यह स्फीत ढंग से भी संप्रेषित हो सकता है तथा सार की तरह भी हो सकता है। किसी वर्णनीय विषय के रूप को स्पष्ट करने के लिए रूपों का चयन और उनका निर्धारण–शैली के अंतर्गत आता है। व्यक्ति–वैशिष्ट्य की विभिन्नता से शैलियाँ भी भिन्न होती हैं। व्यावहारिक तथा स्वाभाविक शैली में बोलचाल के रूपों को प्रयुक्त किया जाता है। जबकि काव्यात्मक शैली

अलंकृत रूपों से युक्त होती है।

शैली का संदर्भ– किसी वक्ता अथवा लेखक की अभिव्यक्ति पद्धति का संदर्भ होता है। प्रत्येक वक्ता, लेखक या कवि की अभिव्यंजना भाषा के माध्यम से होती है, उस भाषा में प्रयोक्ता के व्यक्तित्व की छाप रहती है तथा वह अभिव्यक्ति किसी न किसी विषय से भी सम्बद्ध होती है। इतना ही नहीं, प्रत्येक लेखक जब किसी विषय की अभिव्यक्ति के लिए भाषा का प्रयोग करता है, तब वह अपनी रुचि के अनुकूल रूपों का चयन करता है, प्रचलित अभिव्यक्ति–पद्धति से हटकर चलने का प्रयास करता है, रूढ़ प्रयोगों को छोड़कर नये प्रयोग करता है, विभिन्न पुरातन उपमानों को छोड़कर नये उपमानों को अपनाता हुआ अपने अप्रस्तुतों में भी नवीनता लाने का प्रयास करता है तथा अभिव्यक्ति के सहज उपलब्ध रूपों को अपनाता हुआ भी उनमें नवीनता लाने का प्रयास करता है। इसी कारण उसकी वर्णन पद्धति पृथक सी दिखाई देने लगती है और उसकी अभिव्यक्ति में उसकी व्यक्तिगत विशेषता आ जाती है। भाषागत अभिव्यक्ति की विशिष्ट व वैयक्तिक पद्धति को अलग शैली कहते हैं। 'इस प्रकार साहित्य व

साहित्य–शास्त्र की दृष्टि से शैली के तीन रूप हैं– (1) शैली कृतिकार के व्यक्तित्व की विशिष्टता है, (2) शैली विषय–प्रतिपादन की प्रविधि है, तथा (3) शैली कलात्मक अभिव्यक्ति है। डॉ. नगेन्द्र ने भाषा–वैज्ञानिकों के मतानुसार शैली के रूप की विवेचना करते हुए शैली के अर्थ बतलाये हैं– (क) व्यक्ति सापेक्ष भाषिक चयन को–शैली कहते हैं, (ख) प्रासंगिक मानक भाषा से विपथन को शैली कहते हैं। (ग) प्रभावी अभिव्यंजना को शैली कहते हैं, जिसमें चयन, विचलन के वैशिष्ट्य द्वारा विभिन्न अर्थों की निष्पत्ति होती है। भाषा के उस वैशिष्ट्य को शैली कहते हैं जो विचारों को उचित ढंग से प्रेषित करता है। शैली को – विभिन्न लेखकों के विचारों का संप्रेषण करने वाली एक ऐसी पद्धति कहा गया है जो लेखक के विचारों तथा अभिव्यंजना में निहित रहती है तथा भाषा के माध्यम से व्यक्त होती है। उसमें सदैव लेखक का व्यक्तिगत वैशिष्ट्य रहता है।

कोई–कोई विद्वान, 'शैलीविज्ञान' को साहित्य–शास्त्र और भाषाविज्ञान दोनों के क्षेत्र की वस्तु मानते हैं और कई विद्वान इसे सिर्फ प्रयुक्तिपरक भाषाविज्ञान का रूप मानते हैं। इनके अतिरिक्त

कोई–कोई उसको स्वतन्त्र विषय के रूप में स्थापित करते हैं।

शैलीविज्ञान के अन्तर्गत शैली का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है अर्थात् इसमें शैली के रूप को स्पष्ट करते हुये भाषा का अध्ययन किया जाता है। इसका अभिप्राय यह है कि इसमें साहित्यिक व विशिष्ट भाषा–शैली को आधार बनाकर कलात्मक शैली का अनुशीलन नहीं किया जाता, अपितु बोलचाल में प्रयुक्त व्यावहारिक विवरणात्मक सभी प्रकार की भाषा शैली का अध्ययन भी किया जाता है। इसीलिए शैलीविज्ञान में न तो सिर्फ गद्य की तार्किक शैली को अपनाया जाता है, न कलात्मक शैली का वर्णन किया जाता है और न सिर्फ पद्य की साहित्यिक शैली का अध्ययन किया जाता है, अपितु यह इन सभी प्रकार की शैलियों के अध्ययन की ओर प्रवृत्त होता है। जिस पद्धति में साहित्यक शैली का वैज्ञानिक अध्ययन अथवा भाषागत अभिव्यक्ति की विशिष्ट व वैयक्तिक पद्धति का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है उसे 'शैलीविज्ञान' कह सकते हैं।

शैलीविज्ञान साहित्यिक शैली का वैज्ञानिक अध्ययन करता है। एक भाषा तो वह होती है, जिसका प्रयोग साधारण रूप में होता है,

जो बोलचाल में प्रयुक्त होती है तथा जिसे सामान्य भाषा कहते हैं, परन्तु इस साधारण भाषा से अलग प्रकार की भाषा वह होती है, जिसे कवि, उपन्यासकार, निबन्धकार, साहित्यकार अपनाते हैं– भाषा जिसमें साधारण बोलचाल से भिन्न विशिष्टता होती है, अथवा जिसमें उक्तिवैचित्र्य होते हैं। अतएव इसे साहित्यिक भाषा कहा जाता है। इस वर्ग के विद्वानों की मान्यता है कि शैलीविज्ञान के अन्तर्गत इसी साहित्यिक भाषा–शैली का अनुशीलन किया जाता है, क्योंकि इसमें भाषिक चयन अधिक स्वैच्छिक व विचारपूर्वक होता है, इसमें भाषा–सौष्ठव की प्रधानता रहती है और इसके अन्तर्गत वाक्यों को अधिक सतर्कता व मार्मिकता के साथ अपनाया जाता है, जिनका प्रयोग साहित्य के लिए होता है।

स्पष्ट है कि शैलीविज्ञान के अन्तर्गत एक ओर तो साधारण सामान्य से अलग साहित्यिक भाषा की प्रकृति को समझने के लिए उसका शैलीगत अध्ययन किया जाता है, जो पूर्णतया भाषाविज्ञान के अंतर्गत आता है। इसके अतिरिक्त एक अन्य तरह से शैलीगत अनुशीलन किया जाता है, जिसका संदर्भ साहित्य शास्त्र है। भाषा के

साथ अविच्छिन्नता बनाये रखने के कारण अध्ययन के हर स्तर पर शैली–विज्ञान उस वैज्ञानिक प्रणाली को प्रयुक्त करता है, जिसमें साहित्य के सन्दर्भ में भाषा की प्रकृति को स्पष्ट करने की क्षमता हो। स्पष्ट है, यह भाषा की प्रकृति को समझने का 'विज्ञान' है जिसे आज हम 'भाषाविज्ञान' के नाम से जानते हैं। अतः शैलीविज्ञान का संदर्भ– एक ओर प्रतिपाद्य विषय के रूप में साहित्यिक है, तथा एक ओर स्तर पर प्रणाली के रूप में– भाषावैज्ञानिक टेकनीक का संदर्भ भी है।

शैलीविज्ञान साहित्य शास्त्र तथा भाषाविज्ञान दोनों संदर्भों को रखता है। डॉ. नगेन्द्र ने भी शैलीविज्ञान का विवेचन करने के उपरान्त लिखा है कि 'शैलीविज्ञान की परिभाषा– (भाषाविज्ञान के नियमों तथा प्रविधि के अनुसार)– साहित्य के भाषिक विधान का रूपात्मक अध्ययन है। इसी अर्थ में वह भाषाविज्ञान और साहित्य–शास्त्र का, और व्यावहारिक स्तर पर भाषाविज्ञान तथा व्यावहारिक साहित्य–समीक्षा का संयोजक है।' ('शैलीविज्ञान')

शैलीविज्ञान एक ओर तो शैली का अध्ययन साहित्य के आधार पर करता है, जिसमें अलंकार, वक्रोक्ति, अप्रस्तुत बिम्ब, प्रतीक आते

हैं। एक ओर स्तर पर शैलीविज्ञान के अन्तर्गत भाषा–का अध्ययन भाषा–विज्ञान के आधार पर किया जाता है, जिसमें भाषा की प्रकृति के निजी रूप के अध्ययन को महत्त्व दिया जाता है।

स्पष्ट है कि शैली विज्ञान का संदर्भ–एक स्तर पर साहित्यिक समीक्षा से है और एक ओर स्तर पर भाषा की प्रकृति के आधार पर भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन से है। साहित्यिक समीक्षा का संदर्भ 'साहित्य– शास्त्र' है और भाषा की प्रकृति के आधार पर भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन का आधार 'भाषाविज्ञान' है। अतः शैलीविज्ञान के अध्ययन के दो स्तर स्पष्ट हैं–

- साहित्य–शास्त्र के आधार पर शैलीपरक अध्ययन
- भाषाविज्ञान के आधार पर शैलीवैज्ञानिक अध्ययन।

साहित्य–शास्त्र के आधार पर किसी लेखक अथवा कृति की शैली का अध्ययन, अलंकार, वक्रोक्ति, औचित्य, बिम्ब, प्रतीक को विषय बनाकर यह अध्ययन करता है कि– लेखक की अभिव्यक्ति में शास्त्र का अनुसरण कहाँ तक किया गया है अथवा कृति की शैली में

अलंकार शास्त्र के नियमों का पालन व्यवस्थित ढंग से कहाँ तक हुआ है। ऐसा शैली–वैज्ञानिक अध्ययन, साहित्यिक आलोचना की परिधि में होता है, साहित्य–समीक्षा की परंपरा पर आधारित होता है और साहित्य–समीक्षा के व्यावहारिक रूप को अपनाकर किया जाता है। अतः ऐसे अध्ययन को भाषाविज्ञान से अलग साहित्य–शास्त्र माना जाता है।

भाषाविज्ञान के आधार पर– जब किसी लेखक, अथवा कृति का शैलीवैज्ञानिक अध्ययन करते हैं तब उस लेखक अथवा उस पद्य में प्रयुक्त भाषा की प्रकृति के निजी तत्वों का वैज्ञानिक विश्लेषण–विवेचन करते हैं। प्रकृति और संरचना के आधार पर भाषा के तत्व माने गये हैं– रूप से लेकर वाक्य तक भाषाविज्ञान के आधार पर जब शैलीवैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है, तब यह देखा जाता है कि किसी लेखक की भाषा में कहाँ–कहाँ विचलन है अथवा किस तरह के चयन है, कैसे समानान्तर प्रयोग किया गया है अथवा कृति में कहाँ–कहाँ विचलन है, किस तरह का चयन है।

किस तरह के शब्द विधान को तथा कैसे सर्जनात्मक विरूपण

के शब्दों को प्रयुक्त किया गया है। किस तरह के शब्द प्रयुक्त किये गये हैं। उसकी भाषा में कहाँ–कहाँ रूप विचलन है, किस रूप का चयन है, कैसे रूप समानान्तर प्रयुक्त किये गये हैं; उसकी भाषा में कहाँ–कहाँ वाक्य विचलन है, कैसा वाक्य चयन है, कैसे वाक्यों के समानान्तर प्रयोग किये गये हैं। वाक्यों के अंतर्गत मुहावरे तथा प्रोक्ति के विचलन के अध्ययन भी किये जा सकते हैं। भाषा के चालू मुहावरों से अलग भिन्न रूपों के चयन किये जाते हैं। इस प्रकार भाषा विज्ञान के आधार पर किसी भी कृति अथवा लेखक की भाषा के शैलीवैज्ञानिक अध्ययन किये जाते हैं।

शैली विज्ञान के संदर्भ में जब भाषा में प्रयुक्त रूपों का अध्ययन किया जाता है, तब यह देखने का प्रयास किया जाता है कि रूपों के प्रयोग के अंतर्गत कहाँ नवीनता अथवा विचलन मिलता है, कहाँ रूपों का चयन अधिक मार्मिक, है तथा कहाँ पर रूपों का समानान्तर प्रयोग करके कृति को अधिकाधिक प्रेषणीय बनाया गया है।

वहाँ भाषा के अंदर विभिन्न स्तरों पर विचलन, चयन व भाषा तत्वों की आवृत्तियों के विशेष रूप में अध्ययन किये जाते हैं। जहाँ पर

लेखक– अन्यों की परिपाटी को तोड़कर–किसी रूप को प्रयुक्त करते हैं, वहाँ अभिव्यक्ति में रूप का विचलन होता है।

पद्य की ''वस्तु अगर विशिष्ट है तो वह इसलिये कि अतिरिक्त अर्थ विशिष्ट है और इसलिये कि वह एक निश्चित तथा विशिष्ट शैली में बंधा है।''

लेखक कहीं सावधान होकर अपने विवेक से शैलीगत तत्वों का चयन अथवा विचलन करते हैं और कहीं अभ्यास से अविचारित रूप में ये तत्व उसके सहज बोध के तत्व बन जाते हैं।

शैली विज्ञान साहित्यिक कथ्य से अलग–थलग शिल्प की कोई स्थिति नहीं मानता। एक के बगैर दूसरे की सत्ता असिद्ध तथा लुप्त सी हो जाती है। अतः कथ्य और रूप में अलगाव नहीं है।

साहित्य की भाषा साधारण अर्थ को प्रकाशित करने वाली साधारण भाषा नहीं होती, वह जटिल अर्थों को प्रकाशित करने वाली विशिष्ट भाषा होती है। उसकी यह विशिष्टता कथ्य की आवश्यकता तथा लेखक के व्यक्तित्व पर आधारित होती है। इसी विशिष्टता के कारण उसका रूप अपनी सम्प्रेषणीयता में भिन्न प्रकार का होता है।

इस प्रकार शैलीविज्ञान रूप के माध्यम से कथ्य तक पहुंचने के कारण विश्लेषण प्रणाली में भाषा विज्ञान के वस्तुवादी दृष्टिकोण तथा पद्धति को अपनाता है।